Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 35

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

7 मुहर्रम हज्जा 1442 हिजरी कमरी 27 ज़ुहूर 1399 हिजरी शमसी 27 अगस्त 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

इन्सान कभी नेक नहीं कहला सकता जब तक कि वे रद्दी अक़ीदों और फासिद विचारों से ख़ाली न हो और फिर कर्म भी फसाद से ख़ाली हो जाएं।

सीमा से बढ़ कर खर्च करने वाला अपने माल को नष्ट करता है परन्तु अल्लाह की राह में खर्च करने वाला उस को फिर पाता है और खर्च से अधिक पाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सूरत अल-असर में दो सिलसिलों का वर्णन

मैं फिर मूल उद्देश्य की तरफ़ रुजू करके कहता हूँ कि सूरह वल अस्र में दो सिलसिलों का वर्णन फ़रमाया है। एक अबरार तथा अख़यार (नेकों) का सिलसिला है और दूसरा कुफ़्फ़ार और फ़ुज्जार का। कुफ़्फ़ार और फ़ुज्जार के सिलसिला का वर्णन यूं फ़रमाया

اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِیۡ خُسۡرٍ (अल-असर:3) और दूसरे सिलसिले को इस तरह से अलग किया اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ (अल-असर:4) अर्थात एक वे हैं जो घाटा में हैं, परन्तु घाटा में मोमिन और नेक कर्म करने वाले नहीं हैं। इस से पता चला कि घाटा में वे हैं जो मोमिन और नेक कर्म करने वाले नहीं हैं। याद रखो कि सलाह का शब्द वहां आता है जहां फ़साद का बिल्कुल नामोनिशान न रहे। इन्सान कभी सालेह नहीं कहला सकता जब तक वह रद्द करने वाली, तथा बुरी आस्थाओं से ख़ाली न हो और फिर कर्म भी फ़साद से ख़ाली हो जाएं। मुत्तक़ी का शब्द बाब इफ़्तिआल से आता है और यह बाब बनावट के लिए आता है। इस से मालूम हुआ कि मुत्तक़ी को बड़ा मुजाहिदा और कोशिश करनी पड़ती है और इस अवस्था में वह नफ़से लव्वामा के नीचे होता है और जब हैवानी ज़िन्दगी व्यतीत करता है उस वक़्त अम्मारा के नीचे होता है और कोशिशों की अवस्था से निकल कर जब ग़ालिब आ जाता है तो मुतमइन्ना की अवस्था में होता है। मुत्तक़ी नफ़से अम्मारा की अवस्था से निकल कर आता है और लव्वामा के नीचे होता है। इसी लिए मुत्तक़ी की शान में आया है कि वह नमाज़ को खड़ी करते हैं। मानो इस में भी एक किस्म की लड़ाई ही की अवस्था होती है। शंकाएं और वहम आकर हैरान करते हैं परन्तु वह घबराता नहीं और ये शंकाएं उस को हरा नहीं सकती। वह बार-बार ख़ुदा तआला की सहायता चाहता है और ख़ुदा के समक्ष चिल्लाता और रोता है यहां तक कि विजयी हो जाता है। इसी तरह माल के ख़र्च करने में भी शैतान उस को रोकता है और इसराफ़ (सीमा से बढ़ कर) और अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करने को एक जैसा दिखाता है हालाँकि इन दोनों में धरती तथा आकाश का फ़र्क़ है। इसराफ़ करने वाला अपने माल को नष्ट करता है परन्तु अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने वाला उस को फिर पाता है और ख़र्च से अधिक पाता है। इस लिए ही مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ(अलबक़र:4) फ़रमाया है।

शेष पृष्ठ 12 पर

कुरआन का यह दावा है कि इसमें वे सब सच्चाइयां मौजूद हैं जो पहली सब किताबों में पाई जाती हैं

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"नमाज़ जमाअत के साथ की ज़रूरत को आम तौर पर मुसलमान भूल गए हैं और ये एक बड़ा कारण मुसलमानों की फूट और मतभेद का है। अल्लाह तआला ने इस इबादत में बहुत सी व्यक्तिगत और क़ौमी बरकतें रखी थीं परन्तु अफ़सोस कि मुसलमानों ने उन्हें भुला दिया क़ुरआन करीम ने जहां भी नमाज़ का आदेश दिया नमाज़ बाजमाअत का आदेश दिया है ख़ाली नमाज़ पढ़ने का कहीं भी आदेश नहीं। इस से मालूम होता है कि नमाज़ बाजमाअत धर्म के प्रमुख नियमों में से है बल्कि क़ुरआन करीम की आयतों को देखकर कि जब भी नमाज़ के आदेश का वर्णन हुआ है नमाज़ बाजमाअत के शब्दों में हुआ है तो साफ़ तौर पर यह नतीजा निकलता है कि क़ुरआन करीम के निकट नमाज़ सिर्फ तभी अदा होती है कि जब बाजमाअत अदा की

शेष पृष्ठ 12 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

जमाअत के साथ नमाज़ का महत्व

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम तक़बीर इक़ामत सुनो तो नमाज़ के लिए (इस तरह) आओ कि सन्तोष और वक़ार को अपनी आदत बनाओ और तुम जल्दी न किया करो। जो रकअत तुम पा लो वे पढ़ लो और जो तुमसे रह जाए उसे पूरा कर लो।

(बुख़ारी ,किताबुल आज़ान, बाब ला यससा इलस्सलात)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मेरे दिल में आया कि मैं कहूं लकड़ियाँ इकट्ठी की जाएं और कहूं कि अज़ान दी जाए। फिर किसी आदमी से कहूं कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए और वहीं उनको छोड़कर उन आदमियों के पास जाऊं जो नहीं आए। उनके घरों को उनके साथ जला दूं और क़सम है उस की जिसके हाथ में मेरी जान है , अगर उनमें से किसी को इल्म होता कि उसे गोश्त की एक मोटी हड्डी या दो अच्छे पाए मिलेंगे तो वे (उस के लिए)इशा की नमाज़ में ज़रूर मौजूद होता।

(बुख़ारी, किताबुल आज़ान, बाब वजूब सलातुल जमाअत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :जमाअत के साथ नमाज़ अकेले की नमाज़ से सत्ताईस गुणा बढ़कर होती है।

(बुख़ारी, किताबुल आज़ान, बाब फ़ज़ल सलातुल जमाअत। प्रकाशन 2003 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-16)

फ़ैसला करने से पहले हर क़ाज़ी को 2 नफ़ल पढ़ने चाहिऐं।

जब कोई औरत क़ज़ा में प्रस्तुत हो तो उसके साथ,उस की मदद के लिए कोई औरत आनी चाहिए, चाहे वह वकील हो या कोई औरत हो।

क्या आपने देखा है कि वे क्या कारण थे जिनके कारण मुराफ़ा आलिया ने फ़ैसला बदला है

यह आप लोगों को देखना चाहीए ताकि क़ाज़ियों को ट्रेनिंग दें क़ाज़ियों को भी इलम हो कि इस कारण से , उनका फ़ैसला किया गया है।

क़ाज़ियों में इतना हौसला होना चाहिए कि एक घंटा तक गालियां सुन सकते हों।

शादी होते ही तीन चार दिन के बाद जो मामले आ जाते हैं कि तलाक़ लेनी है या ख़ुला लेना है तो ऐसे केस अमीर साहिब के सपुर्द कर दिया करें , उसको अभी डील न किया करें।

क़ज़ा का काम सुविधा पैदा करना है, हुक्म को मनवाना या ठूंसना नहीं है, दुआ करके फ़ैसला करना चाहिए, फ़ैसले से पहले हर क़ाज़ी को 2 नफ़ल पढ़ने चाहिऐं।

नाज़िमीन दारुल क़ज़ा तथा सदर क़ज़ा बोर्ड को हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की सुनहरी तथा प्रमुख नसीहतें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

16 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़जर पढ़ाई। आज से फ़जर का वक्त 6 बजकर 50 मिनट से बदल कर 7 बजे निर्धारित हुआ। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

क़ज़ा बोर्ड जर्मनी के साथ मीटिंग

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ 11 बजकर 10 मिनट पर मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां जमाअत जर्मनी के क़ज़ा के मैंबरों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग थी।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सदर साहिब क़ज़ा बोर्ड ने बताया कि क़ाज़ी साहिबों की संख्या 41 है जिनमें से क़ाज़ी अव्वल 21 हैं और मैंबर क़ज़ा बोर्ड 16 हैं और उन 21 क़ाज़ियों में से कोई भी बोर्ड का मैंबर नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने पूछा। क़ज़ा अव्वल में इस समय कितने केसिज़ हैं। इस पर नाज़िम क़ज़ा ने बताया कि 21 क़ाज़ियों के पास इस समय 40 केसिज़ हैं जबकि मुराफ़ा औला में तीन हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तलाक़ तथा ख़ुला के केसों का बड़ा विस्तार से जायज़ा लिया रिपोर्ट के अनुसार साल 1990 ई में 7 केस थे और साल 2018 ई में यह संख्या 151 केसों की हो गई।

इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया। अमीर साहिब और सैक्रे-टरी तर्बीयत ज़िम्मेदार हैं। इसी तरह लजना, ख़ुद्दाम और अन्सार को भी काम करना चाहिए। सब संस्थाएं यह काम करें तो इतने केस न आएं। यहां आकर शिक्षा के ज़ेवर से सुसज्जित हो गए हैं। नतीजा यह निकल रहा है कि अज्ञानता बढ़ रही है। लड़कियां पढ़ लेती हैं। दिमाग़ ऊंचे हो जाते हैं। हर दूसरा केस ख़ुलाअ का है।

हुज़ूर अनवर की सेवा में ग्राफ़ की सूरत में एक समीक्षा प्रस्तुत की गई जिसके अनुसार साल 2000 ई में 19 ख़ुलाअ के केस थे और 9 तलाक़ के,10 साल के बाद साल 2010 ई में 80 ख़ुलाअ के केस थे और 17 तलाक़ के, फिर 8 साल बाद 2018 ई में 84 ख़ुलाअ के केस थे और 42 तलाक़ के। इस जायज़ा पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया 2018 ई में लड़कों का दिमाग़ भी ख़राब हो गया अब लड़कों का क़सूर अधिक हो गया है।

शादी के बाद कहते हैं कि माँ बाप के कहने पर शादी कर ली थी मुझे तो अमुक लड़की पसन्द थी। अमीर साहिब , सैक्रेटरी तर्बीयत और मुरब्बियों का काम है कि तर्बीयत करें। अगर लड़की पसन्द नहीं थी तो फिर लड़की की ज़िन्दगी क्यों बर्बाद की।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कई लड़के शादी से पहले बता देते हैं कि अमुक लड़की से रिश्ता करना है। लेकिन माँ बाप के बार बार कहने पर उनकी इच्छा के अनुसार कर तो लेते हैं फिर छ: माह, साल बाद जब बच्चा हो जाता है तो बीवी को छोड़ देते हैं। तर्बीयत विभाग वालों को बहुत अधिक काम करने की ज़रूरत है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :जब कोई औरत क़ज़ा में पेश हो तो उसके साथ,उस की मदद के लिए कोई औरत आनी चाहिए। चाहे वह मदद के लिए साथ आने वाली वकील हो या कोई दूसरी औरत हो। उसकी उसे आज्ञा है।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि क़ाज़ी साहिब पहले कई ऐसे सवाल कर देते हैं जो उनको नहीं करने चाहिऐं। यह बहुत अनुचित और नामाक़ूल हरकत है कि इस तरह औरत से उल्टे सीधे सवाल किए जाएं कि पति रात को कब आया। कितना समय गुज़ारा। अपने क़ाज़ियों की ट्रेनिंग करें। केवल ऐसे सवाल करें जो उचित हों। क़ानून की दृष्टि से पहले हकमैन निर्धारित करें जो सुधार की कार्रवाई करें बल्कि इस से पहले अमीर साहिब और तर्बीयत विभाग का काम है कि वे कोशिश करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भी एक खुला का केस आया था। औरत ने अपना मामला पेश करते हुए कहा कि मैं कई कारणों से समझती हूँ कि मैं साथ नहीं रह सकती मुझे पसंद नहीं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो हक़ महर उसने तुमको दिया था उसको वापस कर दो। इस पर इस औरत ने कहा कि मैं उसे दोगुना करके दे दूँगी। इस पर फ़रमाया ठीक है दे दो तो यह खुला का केस था। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कई लड़कियां मुझे लिख देती हैं कि इस तरह के कई सवाल क़ाज़ी साहिब की तरफ़ से किए जाते हैं कि हम उनका जवाब नहीं दे सकते। तो ऐसे सवाल करना अनुचित हरकत है।

मुराफ़ा आलिया में भिजवाए जाने वाले केसों के बारे में हुज़ूर अनवर ने पूछा। इस पर नाज़िम क़ज़ा ने निवेदन किया कि हमने 17 केस भिजवाए थे। मुराफ़ा आलिया ने 8 के फ़ैसलों को तब्दील किया और 9 के फ़ैसलों को तब्दील नहीं किया। यहां के फ़ैसले क़ायम रखे।

इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आपने देखा है कि वह क्या कारण थे जिनकी आधार पर मुराफ़ा आलिया ने फ़ैसला बदला है। यह आप लोगों को देखना चाहिए ताकि क़ाज़ियों को ट्रेनिंग दें क़ाज़ियों को भी पता हो कि इस आधार पर , इस कारण से उनका फ़ैसला बदला है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने क़ाज़ियों की ट्रेनिंग करते हैं? उनके रीफ़रेशर

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सअद बिन मआज़ रज़ि के जनाज़ा पर हाज़िर हैं जो आज से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबा औस क़बीला के सबसे बड़े रईस हज़रत सइद बिन मुआज़ रज़ी अल्लाह अन्हो जो इख़लास में, क़ुर्बानी में, इस्लाम की सेवा में, इश्क़े रसूल में यह आदमी ऐसा उच्च स्तर रखता था जो कम ही लोगों को प्राप्त हुआ करता है और इसकी हर हरकत तथा ठहराव से यह स्पष्ट होता था कि इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक की मुहब्बत उसकी रूह की ख़ुराक़ है और उस कारण से कि वह अपने क़बीला का रईस था उसका आचरण अन्सार में एक निहायत गहरा व्यावहारिक प्रभाव रखता था।

इस्लाम के आरम्भ में ईमान लाने वाले, मक्की दौर में तकालीफ़ सहन करने वाले, नबी अकरम की पहरेदारी का सौभाग्य पाने वाले, इस्लाम और ख़िलाफ़त की ग़ैरत रखने वाले, बहादुर घुड़सवार सअद बिन अबी विकास रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

दो मरहूमीन आदरणीय मास्टर अब्दुल समी ख़ान साहिब काठगढ़ी आफ़ रब्वह और आदरणीय सय्यद मुजीबुल्लाह सादिक़ साहिब आफ़ लंदन का ज़िक्रे ख़ैर और उनके साथ सिलसिला के पुराने सेवक , असीरे राहे मौला आदरणीय राना नईमुद्दीन साहिब की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जुलाई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का वर्णन हो रहा था। जंग अहज़ाब और हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यूं लिखा है कि

"इस लड़ाई में मुसलमानों का जानी नुक़्सान अधिक नहीं हुआ। अर्थात केवल पाँच छः आदमी शहीद हुए परन्तु क़बीला औस के सब से बड़े रईस सअद बिन मुआज़ रज़ि को ऐसा गहरा ज़ख़्म आया कि वह अन्त में इससे बच न सके और यह नुक़्सान मुसलमानों के लिए एक नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान था। कुफ़्फ़ार के लश्कर में से सिर्फ तीन आदमी क़त्ल हुए लेकिन इस जंग में क़ुरैश को कुछ ऐसा धक्का लगा कि इसके बाद उनको फिर कभी मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस तरह जत्था बनाकर निकलने या मदीना पर हमला करने की हिम्मत नहीं हुई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी पूरी हुई।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 595)

जैसा कि पिछले ख़ुत्बे में वर्णन हो चुका है कि आप रज़ि ने फ़रमाया था आइन्दा से कुफ़्फ़ार को हिम्मत नहीं होगी कि हम पर हमला करें। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि को जंग ख़ंदक़ के अवसर पर कलाई में ज़ख़्म आया जिससे आप की शहादत हुई। हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि मैं जंग ख़ंदक़ के दिन निकली और लोगों के क़दमों के निशान पर चल रही थी कि मैंने पीछे से आहट सुनी। मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि अपने भतीजे हारिस बिन औस के साथ ढाल लिए हुए थे। मैं ज़मीन पर बैठ गई। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि मेरे पास से रजज़ (जंग) का यह शेअर पढ़ते हुए गुज़रे कि

لَبِّثْ قَلِيْلًا يُدْرِكُ الْهَيْجَا جَمَلْ
مَا أَحْسَنَ الْمَوْتَ إِذَا حَانَ الْأَجَلْ!

कि कुछ देर प्रतीक्षा करो यहां तक कि हमल जंग के लिए हाज़िर हो जाए। मौत क्या ही अच्छी होती है जब निर्धारित समय का वक़्त आ गया हो।

हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के शरीर पर एक ज़िरह थी जिससे आपके दोनों तरफ़ बाहर थीं। अर्थात जिस्म भारी होने की वजह से, चौड़ा होने की वजह से इससे बाहर निकल रहा था। कहती हैं कि मुझे इस बात पर हज़रत सअद रज़ि की दोनों तरफों के ज़ख़मी होने का सन्देह हुआ कि ज़िरह से बाहर हैं। हज़रत सअद लम्बे और बड़े शरीर वाले लोगों में से थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 322'' सअद बिन मुआज़'', दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान1990 ई)

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि को इब्ने अरका ने ज़ख़्मी किया था। इब्ने अरका का नाम हब्बान बिन अब्द मुनाफ़ था। क़बीला बनू आमिर बिन लुई से सम्बन्ध रखता था। अरका उसकी माता का नाम था।

(अल-असाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हज्र असकलानी भाग 03 पृष्ठ 71 ज़ेर लफ़्ज़ ''सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है। वह कहते हैं कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के बाज़ू की रग में तीर लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से तीर के फल को निकाल कर फल से उसको फिर बाद में काट कर दाग़ दिया, उस ज़ख़म को काट कर दाग़ दिया फिर वह सूज गया। आप रज़ि ने इसको दोबारा काट कर दोबारा दाग़ दिया। जो ज़ख़्म लगा था तीर के फल से ही उसको काटा और फिर दाग़ दिया।

(सही मुस्लिम किताबुस्सलाम बाब ले कुल्ले दाइन दवाउन इस्तहबाब अत्तदावी हदीस 2208)

हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि मुशरिकीन में से एक शख़्स इब्ने अरका हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि को तीर मार रहा था। उसने एक तीर मारते हुए कहा यह लो मैं इब्ने अरका हूँ। वह तीर हज़रत सअद रज़ि के बाज़ू की रग में लगा। ज़ख़्मी होने पर हज़रत सअद रज़ि ने अल्लाह तआला से यह दुआ की कि हे अल्लाह मुझे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक कि तू बनू क़ुरैज़ा से मेरी तसल्ली न करा दे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 322 ज़ेर लफ़्ज़ ''सअद बिन मुआज़'',दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि ख़ंदक़ के दिन हज़रत सअद रज़ि को ज़ख़्म आया। क़ुरैश के एक शख़्स हब्बान बिन अरका ने आप की कलाई पर तीर मारा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में उनके लिए एक ख़ेमा लगा दिया ताकि क़रीब रह कर उनकी इयादत कर सकें।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 325 ''सअद बिन मुआज़'', दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद रज़ि का ज़ख़्म ख़ुशक हो कर अच्छा होने लगा तो उन्होंने दुआ की कि हे अल्लाह तू जानता है कि मुझे तेरे मार्ग में इस क़ौम के ख़िलाफ़ जिहाद करने से बढ़कर कोई चीज़ अधिक महबूब नहीं जिसने तेरे रसूल को झुठलाया और उसे निकाल दिया। हे अल्लाह! मैं ख़्याल करता हूँ कि तूने हमारे और उनके बीच जंग का ख़ात्मा कर दिया है। अगर क़ुरैश की जंग में से कुछ बाक़ी है तो मुझे उनके मुक़ाबला के लिए ज़िन्दा रख। अगर अभी और अधिक कुछ जंगें होनी हैं तो फिर मुझे उस समय तक ज़िन्दा रख ताकि मैं तेरे मार्ग में उनसे जिहाद कर सकूं और अगर तूने हमारे और उनके बीच जंग

का ख़ात्मा कर दिया है जिस तरह कि मेरी सोच है तो फिर मेरी रग खोल दे और इस ज़ख़्म को मेरी शहादत का माध्यम बना दे। हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि ज़ख़्म उसी रात फट गया और उस में से ख़ून बह निकला। मस्जिद नबवी में बनू ग़फ़्फ़ार के लोग ख़ेमा लगाए हुए थे। ख़ून बह कर जब उनके पास पहुंचा तो वह डर गए। लोगों ने कहा हे ख़ेमे वालो यह ख़ून कैसा है जो तुम्हारी तरफ़ से हमारे पास आ रहा है। क्या देखते हैं कि हज़रत सअद रज़ि के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा था और इसी से उनकी वफ़ात हो गई।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का ख़ून बहने लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठकर उनकी तरफ़ गए और उन्हें अपने साथ चिमटाया। ख़ून रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह और दाढ़ी पर लग रहा था। जिस क़दर कोई शख़्स आपको ख़ून से बचाना चाहता था अर्थात जिस तरह वह बह रहा था लोगों की कोशिश थी कि आप रज़ि को ख़ून न लगे, इससे अधिक आप रज़ि हज़रत सअद रज़ि के क़रीब हो जाते थे यहां तक कि हज़रत सअद रज़ि वफ़ात पा गए।

एक और रिवायत में है कि जब हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का ज़ख़्म फट गया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ तो आप रज़ि उनके पास तशरीफ़ लाए ,उनका सिर अपनी गोद में रखा और उन्हें सफ़ैद चादर से ढाँप दिया गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि हे अल्लाह सअद रज़ि ने तेरी राह में जिहाद किया और तेरे रसूल की तसदीक़ की और जो उसके ज़िम्मे था उसे अदा कर दिया अत: तू इसकी रूह को इस ख़ैर के साथ स्वीकार फ़र्मा जिसके साथ तू किसी रूह को स्वीकार करता है। जब हज़रत सअद रज़ि में, कुछ थोड़ी सी होश थी, उस वक़्त मृत्यु के निकट थे , हज़रत सअद रज़ि ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्द सुने तो उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप पर सलाम हो। मैं गवाही देता हूँ कि आप रज़ि अल्लाह के रसूल हैं। जब सअद रज़ि के घर वालों ने देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि का सिर अपनी गोद में रखा हुआ है तो वे डर गए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बात का वर्णन किया गया कि सअद रज़ि के घर वाले आप रज़ि की गोद में उसका सिर देखकर डर गए थे तो आप रज़ि ने यह दुआ दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया :मैं अल्लाह से इस बात का इच्छुक हूँ कि जितने तुम लोग इस वक़्त घर में मौजूद हो उतने ही अधिक संख्या में फ़रिश्ते हज़रत सअद रज़ि के देहान्त के समय हाज़िर हों।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 325-326 ''सअद बिन मुआज़'', दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान1990 ई)

हज़रत अनस रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बारीक रेशमी कपड़े का एक चोग़ा तोहफ़ा दिया गया। आप रेशमी कपड़ा पहनने से मना फ़रमाया करते थे। वह कपड़ा देखकर लोगों को ताज्जुब हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है सअद बिन मुआज़ रज़ि के रूमाल जन्नत में इससे अधिक ख़ूबसूरत होंगे। ये बुख़ारी की हदीस है।

(सही बुख़ारी किताबुलिल हदिया मिनल मुश्रेकीन हदीस 2615)

उन्होंने हाथ में कपड़ा देखा। उनका ख़्याल था शायद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसको प्रयोग करेंगे क्योंकि आप तो मना फ़रमाया करते थे लेकिन बहरहाल आप रज़ि ने इसको देख कर यह उदाहरण दी कि तुम इस पर हैरान हो रहे हो बल्कि हैरत का इज़हार किया। असल में तो दूसरी हदीस से स्पष्ट होता है कि लोगों ने हैरत का इज़हार किया जैसा कि मुस्लिम की हदीस में है। इसकी रिवायत इस तरह है कि हज़रत बराअ रज़ि कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक रेशमी चोग़ा तोहफा के रूप में पेश किया गया जिसे आप रज़ि के सहाबा रज़ि छूने लगे और उसकी नरमी पर हैरानी का इज़हार करने लगे। इस पर आप रज़ि ने फ़रमाया क्या तुम उसकी नर्मी पर आश्चर्य करते हो यक़ीनन जन्नत में सअद बिन मुआज़ रज़ि के रूमाल इससे अधिक बेहतर और अधिक नर्म हैं।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब मिन फ़ज़ाइल सअद बिन मुआज़ 2468)

हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप रज़ि फ़रमाते थे सअद बिन मुआज़ रज़ि की वफ़ात पर अर्श काँप गया। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताबुल मनाकिब अन्सार बाब मनाकेब सअद बिन मुआज़ हदीस 3803)

और मुस्लिम में इस तरह है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि ने वर्णन किया कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जबकि हज़रत सअद रज़ि का जनाज़ा रखा हुआ था फ़रमाया कि इसकी वजह से रहमान का अर्श कांप उठा।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब मिन फज़ायल सअद बिन मुआज़ हदीस नन्बर 2467)

इन बातों की तफ़सील और थोड़ा सा विस्तार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यूं फ़रमाया है। आप लिखते हैं कि

''हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि रईस क़बीला औस की कलाई में जो ज़ख़्म जंग ख़ंदक़ के अवसर पर आया था वह बावजूद बहुत ईलाज के अच्छा होने में नहीं आता था और ठीक हो कर फिर खुल जाता था। चूँकि वह एक बहुत मुख़लिस सहाबी थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी तीमारदारी का विशेष ख़्याल था। इसलिए आप रज़ि ने जंग ख़ंदक़ की वापसी पर उनके बारे में हिदायत फ़रमाई थी कि उन्हें मस्जिद के सेहन में एक ख़ेमा में रखा जाए ताकि आप रज़ि आसानी के साथ उनकी तीमारदारी फ़र्मा सकें। अत: उन्हें एक मुसलमान औरत रफ़ी नामक के ख़ेमा में रखा गया जो बीमारों की तीमारदारी और नर्सिंग में महारत रखती थी' अर्थात वह ऐसा ख़ेमा था जहां मरीज़ रखे जाते थे ''और प्राय मस्जिद के सेहन में ख़ेमा लगा कर मुसलमान ज़ख़्मियों का ईलाज किया करती थी। परन्तु बावजूद इस ग़ैरमामूली ध्यान के सअद रज़ि की हालत ठीक न हुई और इसी दौरान में बनूक़ुरैज़ा की घटना हो गई जिस की वजह से सअद रज़ि को ग़ैरमामूली कष्ट और तकलीफ बर्दाश्त करनी पड़ी और उनकी कमज़ोरी बहुत बढ़ गई। इन्हीं दिनों में एक रात सअद रज़ि ने निहायत गिड़गिड़ा कर यह दुआ की कि हे मेरे मौला तू जानता है कि मेरे दिल में यह इच्छा किस तरह भरी हुई है कि मैं उस क़ौम के मुक़ाबला में तेरे धर्म की हिफ़ाज़त के लिए जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल का इन्कार किया और उसे उसके वतन से निकाल दिया। हे मेरे आक़ा मेरे ख़्याल में अब हमारे और क़ुरैश के बीच लड़ाई का ख़ात्मा हो चुका है लेकिन अगर तेरे इलम में कोई जंग अभी बाक़ी है तो मुझे इतनी मोहलत दे कि मैं तेरे रस्ते में उनके साथ जिहाद करूँ लेकिन अगर उनके साथ हमारी जंग ख़त्म हो चुकी है तो मुझे अब ज़िन्दगी की इच्छा नहीं है। मुझे इस शहादत की मौत मरने दे। लिखा है कि उसी रात सअद रज़ि का ज़ख़्म खुल गया और इस क़दर ख़ून बहा कि ख़ेमे से बाहर निकल आया और लोग घबरा कर ख़ेमा के अंदर गए तो सअद रज़ि की हालत ठीक न थी। आख़िर उसी हालत में सअद रज़ि ने जान दी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सअद रज़ि की वफ़ात का बहुत सदमा हुआ और वास्तव में उस वक़्त के हालात के अधीन सअद रज़ि की वफ़ात मुसलमानों के लिए एक असहनीय नुक़्सान था। सअद रज़ि को अन्सार में लगभग वही हैसियत प्राप्त थी जो मुहाजिरीन में अबू बकर सिद्दीक रज़ि को प्राप्त थी। इख़लास में, क़ुर्बानी में, ख़िदमत इस्लाम में, इश्क़े रसूल में यह शख़्स ऐसा ऊंचा स्तर रखता था जो कम ही लोगों को प्राप्त हुआ करता है और इसकी हर हरकत तथा ठहराव से यह ज़ाहिर होता था कि इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक की मुहब्बत उसकी रूह की ख़ुराक़ है और इस कारण से कि वह अपने क़बीला का रईस था उसका उदाहरण अन्सार में एक निहायत गहरा व्यावहारिक प्रभाव रखता था। ऐसे क़ाबिल रुहानी पुत्र की वफ़ात पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सदमा एक फ़ित्री बात था परन्तु आप रज़ि ने पूर्ण सब्र से काम लिया और ख़ुदाई इच्छा के सामने सिर को झुका दिया।

जब सअद रज़ि का जनाज़ा उठा तो सअद रज़ि की बूढ़ी माता ने मुहब्बत के तकाज़ा से किसी क़दर बुलंद आवाज़ से उनका नोहा किया और इस नोहा में ज़माना के नियम के अनुसार सअद रज़ि की कुछ खूबियां वर्णन कीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस नोहा की आवाज़ सुनी तो यद्दपि आप रज़ि ने प्राय नोहा करने को पसन्द नहीं किया परन्तु फ़रमाया कि नोहा करने वालियाँ बहुत झूठ बोला करती हैं लेकिन इस वक़्त सअद रज़ि की माँ ने जो कुछ कहा है वह सच कहा है। अर्थात जो खूबियां सअद रज़ि में वर्णन की गई हैं वे सब ठीक हैं। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और

दफ़नाने के लिए ख़ुद साथ तशरीफ़ ले गए और क़ब्र की तैयारी तक वहीं ठहरे रहे और आख़िर वहां से दुआ करने के बाद तशरीफ़ लाए।

शायद इसी अवसर पर किसी मौक़ा पर आप ने फ़रमाया कि اِهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ لِمَوْتِ سَعْدٍ अर्थात सअद रज़ि की मौत पर ख़ुदाए रहमान का अर्श झूमने लग गया है।' बाक़ियों ने (अनुवाद किया है कि कांप उठा है या काँप उठा। आप रज़ि ने फ़रमाया कि झूमने लग गया ''अर्थात आलमे आख़रत में ख़ुदा की रहमत ने ख़ुशी के साथ सअद रज़ि की रूह का स्वागत किया।' अर्श के झूमने से यह अभिप्राय है। ''एक समय के बाद जब आप रज़ि को किसी जगह से कुछ रेशमी कपड़े तोहफा में आए तो कुछ सहाबा ने उन्हें देखकर उनकी नर्मी को बड़े ताज्जुब के साथ वर्णन किया और उसे एक ग़ैर मामूली चीज़ जाना। आप रज़ि ने फ़रमाया क्या तुम इसकी नर्मी पर ताज्जुब करते हो? ख़ुदा की क़सम जन्नत में सअद रज़ि की चादरें इनसे बहुत अधिक नर्म और बहुत अधिक अच्छी है।''

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 613-614)

बुख़ारी और मुस्लिम की आधी अहादीस में जो पहले वर्णन हुई हैं वहां रूमाल का वर्णन है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यहां उसका अनुवाद चादरें किया है। बहरहाल अरबी का जो शब्द प्रयोग हुआ है उसके लिहाज़ से कपड़े को भी कहते हैं

हज़रत सअद रज़ि की माता आपके ग़म में रोते हुए यह शेअर पढ़ रही थीं

وَيْلُ أُمِّ سَعْدٍ سَعْدًا بَرَاعَةً وَنَجْدًا
بَعْدَ أَيَادٍ يَالَهُ وَمَجْدًا مُقَدَّمًا سَدَّ بِهِ مَسَدًّا

उम्मे सअद को सअद की जुदाई पर अफ़सोस है जो ज़हानत और बहादुरी का पैकर था। जो बहादुरी और शराफ़त की साक्षात मुर्ति था। उस मुहसिन की बुज़ुर्गी के क्या कहने जो सब ख़ाली स्थान भरने वाला सरदार था।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया كُلُّ الْبَوَاكِيْ يَكْذِبْنَ إِلَّا أُمَّ سَعْدٍ कि किसी के मरने पर हर रोने वाली झूठ बोलती है। ग़ैर ज़रूरी अतिश्योक्ति से काम लेती है सिवाए सअद की माता के। तबक़ातुल कुबरा का यह हवाला है

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 328 ''सअद बिन मुआज़'',दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान1990 ई)

हज़रत सअद रज़ि भारी भरकम आदमी थे जब उनका जनाज़ा उठाया गया तो मुनाफ़क़ीन कहने लगे कि हमने किसी आदमी का जनाज़ा इस क़दर हल्का नहीं देखा जितना हज़रत सअद रज़ि का था और यह कहते जाते थे कि ऐसा उनके बनू क़ुरैज़ा के बारे में फ़ैसले के कारण से हुआ है अर्थात उसको नकारात्मक रँग देना चाहते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इसके बारे में आगाह किया गया तो आप रज़ि ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसकी क़ुदरत में मेरी जान है सअद रज़ि का जनाज़ा जो तुम्हें हल्का लगा तो वह इसलिए कि सअद रज़ि का जनाज़ा फिरश्ते उठाए हुए हैं। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सअद बिन मुआज़ रज़ि के जनाज़ा पर हाज़िर हैं जो आज से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 328 '' सअद बिन मुआज़'',दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 464 ''सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के जनाज़े के आगे आगे चलते देखा।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 329 ''सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अब्बू सईद ख़ुदरी रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं उन लोगों में शामिल था जिन्होंने जन्नतुल बकीअ में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की क़ब्र खोदी थी। जब हम मिट्टी का कोई हिस्सा खोदते तो मुश्क की ख़ुशबू आती यहां तक कि हम कब्र तक पहुंच गए। जब हम क़ब्र खोद चुके तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। हज़रत सअद रज़ि का जनाज़ा क़ब्र के पास रखा गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। रावी वर्णन करते हैं कि मैंने इतनी अधिक संख्या में आदमी देखे जिन्होंने जन्नतुल बक़ीअ को भर दिया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 329-330 ''सअद बिन मुआज़'',दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

अबदुर्रहमान बिन जाबिर अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत सअद रज़ि की क़ब्र तैयार हो चुकी तो चार लोग हारिस बिन औस रज़ि, उसीद बिन हुज़ैर रज़ि, अबू नाइला सिलकॉन बिन सलामह रज़ि और सलमा बिन सलामह बिन वकश हज़रत सअद रज़ि की क़ब्र में उतरे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत सअद रज़ि के क़दमों की तरफ खड़े थे। जब हज़रत साअद को क़ब्र में उतार दिया गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे का रंग तबदील हो गया। आप रज़ि ने तीन बार सुब्हान-अल्लाह कहा। आप रज़ि के साथ समस्त सहाबा ने भी तीन बार सुब्हान-अल्लाह कहा। यहां तक कि जन्नतुल बक़ीअ गूंज उठी। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार अल्लाह-हु-अकबर कहा। आप रज़ि के साथ समस्त सहाबा रज़ि ने भी अल्लाह-हु-अकबर कहा। यहां तक कि जन्नतुल बक़ीअ अल्लाहु-अकबर से गूंज उठी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया गया कि हे रसूलुल्लाह! हमने आप रज़ि के चेहरे की तब्दीली देखी और आप रज़ि ने तीन बार सुब्हान-अल्लाह कहा। इसका क्या कारण है। तो आप रज़ि ने फ़रमाया कि सअद रज़ि पर क़ब्र में तंगी हुई और उन्हें दबाया गया। अगर इससे किसी को मुक्ति होती तो सअद रज़ि की ज़रूर होती। अत: अल्लाह तआला ने उनके लिए उसे खुला कर दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 330 ''सअ बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान1990 ई)

मिसवर बिन रफ़ाअ कुर्ज़ी वर्णन करते हैं कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की माता उन्हें कब्र में उतारने के लिए आईं तो लोगों ने उन्हें वापस भेज दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें छोड़ दो। वह आईं और इस से पहले कि उनकी क़ब्र पर ईंट और मिट्टी डाली जाती उन्होंने हज़रत सअद रज़ि को कब्र में देखा और कहा मुझे यक़ीन है कि तुम अल्लाह के पास हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि की क़ब्र पर उनकी माता से ताज़ियत की और एक तरफ बैठ गए। मुसलमानों ने क़ब्र पर मिट्टी डाल कर उसे बराबर कर दिया और इस पर पानी छिड़क दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ब्र के पास तशरीफ़ लाए कुछ देर वहां ठहरे और फिर दुआ की और वापस तशरीफ़ ले गए।

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप रज़ि के दो साथियों हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उम्र रज़ि के बाद मुसलमानों पर किसी की जुदाई इतनी तकलीफ वाली न थी जितनी हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की उम्र वफ़ात के वक़्त 37 साल थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 330-331 ''सअद बिन मुआज़'', दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की माता को फ़रमाया क्या तुम्हारा ग़म ख़त्म न होगा और तुम्हारे आँसू नहीं थमेंगे क्योंकि तुम्हारा बेटा वह पहला शख़्स है जिसके लिए अल्लाह तआला मुस्कुराया और जिसके लिए अर्श लरज़ उठा।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 332 ''सअद बिन मुआज़'',दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि को दफ़्न किया और उनके जनाज़े से लौटे तो आप रज़ि के आँसू आप रज़ि की दाढ़ी पर बह रहे थे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 463 ''सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

एक रिवायत हज़रत सअद के हवाले से है। हज़रत सअद रज़ि ने वर्णन किया कि मैं बेशक कमज़ोर हूँ परन्तु तीन बातों में मैं बहुत पुख़्ता हूँ। जो अपनी बातें उन्होंने बताईं कि मेरे अंदर तीन बातें क्या हैं। बहुत कमज़ोर इन्सान हूँ लेकिन ये तीन बातें हैं जो मेरे अंदर बहुत पक्की हैं और उन का मैं अनुकरण करता हूँ। पहली यह कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो सुना उसे हक़ जाना। कोई कभी उनको शंका नहीं हुई। दूसरा यह कि मैंने अपनी नमाज़ में नमाज़ के इलावा कोई दूसरा ख़्याल नहीं आने दिया यहां तक कि नमाज़ सम्पूर्ण कर लूं। बड़े ध्यान से नमाज़ पढ़ते थे। तीसरा यह कि कोई जनाज़ा हाज़िर नहीं होता था परन्तु मैं अपने आपको उसकी जगह मुर्दा ख़्याल करके सोचता हूँ कि वह क्या कहेगा

और उससे क्या पूछा जाएगा। मानो कि वह सवाल तथा जवाब मुझसे हो रहे हैं। आख़िरत की चिन्ता थी।

(मजमा अज़्ज़वायद किताबुल मनाकिब बाब मा जाआ फी उसैद बिन हुज़ैर हदीस 15689 भाग 9, पृष्ठ 375 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत आईशा रज़ि फ़रमाती थीं कि अन्सार के तीन अफ़राद ऐसे थे जो सब बनू अश्हल में से थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी को उन पर फ़ज़ीलत नहीं दी जाती थी और वह हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि , और हज़रत अब्बाद बिन बिशर थे।

(अल-असाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हज्र असकलानी भाग 03 पृष्ठ 71''सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1995 ई)

अगले जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम है हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि। हज़रत सअद रज़ि की कुनिय्यत अबू इस्हाक़ थी। आप के पिता का नाम मालिक बिन अहुैब जबकि कुछ रवायतों में मालिक बिन वहुैब भी वर्णन हुआ है। आप के पिता अपनी कुनिय्यत अब्बू वक़ास की वजह से अधिक मशहूर हैं इसलिए आपका नाम सअद बिन अबी वक़ास रज़ि वर्णन किया जाता है। आप की माता का नाम हमना बिन्त सुफयान था।

(अल्असाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 606-607 दारुल जैल बेरूत)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 101 सअद बिन अबी विकास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का सम्बन्ध क़ुरैश के क़बीला बनू ज़ुहरा से था।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 123)

(सीरत इब्ने हिश्शाम भाग 1 पृष्ठ 680-681 मिन बनी ज़ुहरा, मकतबा मुस्तफ़ा अलबाबी अलहलबी व औलादहू, मिस्र 1955 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि उन दस सहाबा में से हैं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी में जन्नत की बशारत दी थी। इन दस सहाबा को अश्रा मुबश्रा कहते हैं और हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि उनमें सबसे आख़िर पर फ़ौत हुए।

(अल्असाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 324 दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान, 2001 ई)

ये समस्त अस्हाब अर्थात अशरा मबशरा मुहाजिरीन में से थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी वफ़ात के वक़्त उनसे राज़ी थे।

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अपने ईमान लाने के बारे में वर्णन करते हैं कि किसी ने भी इस्लाम स्वीकार नहीं किया परन्तु उस दिन जिस दिन कि मैंने इस्लाम स्वीकार किया और मैं सात दिन तक ठहरा रहा और हालत यह थी कि मैं मुसलमानों का एक तिहाई था।

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाब उन्नबी बाब मनाक़िब सअद बिन अबी वकास हदीस नम्बर 3727)

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अन्सार बाब इस्लाम सअद हदीस नम्बर3858)

तीन आदमी थे। आपका वर्णन है कि मैं नमाज़ के फ़र्ज़ होने से पहले मुसलमान हो चुका था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 453 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत सअद रज़ि के इस्लाम लाने की घटना उनकी बेटी वर्णन करती हैं कि हज़रत सअद रज़ि ने फ़रमाया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं अन्धेरे में हूँ और मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। अचानक मैं देखता हूँ कि चांद प्रकट हुआ और मैं उसकी तरफ़ चल पड़ा। क्या देखता हूँ कि मुझसे पहले हज़रत ज़ैद बिन हारिसह रज़ि, हज़रत अली रज़ि और हज़रत अबू बकर रज़ि चांद की तरफ़ जा रहे हैं। मैंने उनसे पूछा कि आप कब पहुंचे? उन्होंने जवाब दिया कि हम भी अभी पहुंचे हैं। हज़रत सअद रज़ि फ़रमाते हैं कि मुझे ख़बर मिल चुकी थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम छुप कर इस्लाम की तरफ़ बुला रहे हैं। अत: मैं शुअबे अजयाद में आकर आपको मिला। अज मक्का में सफ़ा पहाड़ी से जुड़ा एक स्थान का नाम है जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बकरियां चराई हैं। आप रज़ि अस्र की नमाज़ पढ़ कर फ़ारिग़ हुए थे कि मैं पहुंच गया और बैअत करके मुसलमान हो गया।

(उसदुल ग़ाबह मअरफतिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 455 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान, 2003 ई)

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 63-64)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 30 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई)

हज़रत सअद रज़ि की बेटी आयशा बिन्त सअद रिवायत करती हैं कि मैंने अपने पिता को यह कहते हुए सुना कि जब मैं मुसलमान हुआ उस समय मेरी उम्र सतरह साल थी। कुछ रवायात में ईमान लाने के वक़्त उनकी उम्र उन्नीस साल भी वर्णन हुई है।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 103 सअद बिन अबी विकास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

अव्वलीन इस्लाम लाने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ि की तब्लीग़ से पाँच ऐसे आदमी ईमान लाए जो इस्लाम में महान और उच्च स्तर के सहाबा में गिने जाते हैं। उनमें तीसरे हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि थे जो उस वक़्त बिल्कुल नौजवान थे। यह सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में जो लिखा है उसी से लिया गया है अर्थात उस वक़्त उनकी उम्र उन्नीस साल थी। यह बनू ज़ुहरा में से थे और बहुत दलेर और बहादुर थे। हज़रत उमर रज़ि के ज़माने में इराक़ उन्ही के हाथ पर फ़तह हुआ और अमीर मुआविया के ज़माना में फ़ौत हुए थे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 122-123)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत सी रिवायतें वर्णन की हैं।

(अल्असाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 324 दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान, 2001 ई)

हज़रत सअद रज़ि के बेटे मुसअब वर्णन करते हैं कि मेरे पिता सअद रज़ि ने मुझे वर्णन किया कि मेरी माँ ने अर्थात हज़रत सअद रज़ि की माँ ने क़सम खाई थी कि वह उनसे कभी बात नहीं करेगी यहां तक कि वह अपने धर्म का इन्कार कर दे अर्थात इस्लाम से फिर जाएं। अत: न वह खातीं और न पीती थीं। कहते हैं कि मेरी माँ ने कहा कि अल्लाह तआला तुम्हें अपने माता पिता से उपकार की ताकीद करता है। तुम कहते हो न कि तुम्हारा धर्म ये कहता है कि अल्लाह तआला ने कहा है कि अपने माता पिता से उपकार करो। इसकी ताकीद की जाती है। मैं तुम्हारी माँ हूँ और मैं तुम्हें इसका हुक्म दे रही हूँ कि अब इसको छोड़ो और मेरी बात जो मैं कहती हूँ वह मानो। रावी कहते हैं कि तीन रोज़ तक वह इस अवस्था में रहीं यहां तक कि कमज़ोरी की वजह से उन पर बेहोशी छा गई। फिर उनका बेटा जिसे उमारह कहा जाता था खड़ा हुआ और उन्हें पानी पिलाया। फिर जब होश आई तो वह सअद रज़ि को बददुआ देने लगीं। तब अल्लाह तआला ने क़ुरआन में यह आयत उतारी कि

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا (अल-अनकबूत 9)

कि हमने इन्सान को इसके माता पिता के हुक़ूक़ में एहसान की ताकीदी नसीहत की

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا۔

यह अन्कबूत की आयत है और फिर सूरह लुक़्मान में है कि

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي (लुक़्मान16)

अगर वे दोनों तुझसे झगड़ा करें कि तू मेरा शरीक ठहरा तो इताअत न कर

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِيْ

कि अगर वे कहें तू मेरा शरीक ठहरा तो फिर उनकी इताअत नहीं करनी और इसमें फिर आगे यह है कि

وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا (लुक़्मान16)

दोनों के साथ दुनिया में नियम के अनुसार नर्मी जारी रखो। उनसे सम्बन्ध रखो। उनसे नेकी करो।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब फ़ज़ल साद बिन अबी वकास हदीस1748)

यह झगड़ा अगर शिर्क के बारे में करना है तो फिर बात नहीं माननी। यह जो विस्तारपूर्वक बात है यह विषय इसी तरह पूरा आगे चलता है। लेकिन जो सांसारिक मामले हैं उनमें उनसे नर्मी जारी रखो। وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا उनसे ताल्लुक़ रखो। उनसे नेकी करो।

यह पहली रिवायत मुस्लिम में थी। आगे फिर सीरत में एक और हवाले से लिखा है कि हज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं अपनी माता से साथ बहुत प्यार करता था परन्तु जब मैंने इस्लाम स्वीकार किया तो उसने कहा कि हे साद यह कौन सा धर्म तूने धारण कर लिया है। या तो तू इस नए धर्म को छोड़

दे या मैं कुछ न खाऊं और न पियूँगी यहां तक कि मैं मर जाऊँगी। हज़रत सअद रज़ि कहते हैं कि मैंने उनसे कहा कि हे माँ! ऐसा न करना क्योंकि मैं अपने धर्म को छोड़ने वाला नहीं हूँ। हज़रत सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि एक दिन और एक रात तक मेरी माँ ने न कुछ खाया और न पिया और उसकी हालत ख़राब होने लगी तो मैंने उनसे कहा कि अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारी एक हज़ार जानें हों और वे एक एक करके निकलें तब भी में किसी के लिए अपने धर्म को नहीं छोड़ूंगा। जब आपकी माता ने यह देखा तो खाना पीना शुरू कर दिया। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلٰى أَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا (लुक़्मान16)

अर्थात अगर वे दोनों तुझसे बेहस करें कि तू किसी को मेरा शरीक निर्धारत करे जिसका तुझको कोई इलम नहीं

مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا

तो उन दोनों की बात मत मानना। हाँ सांसारिक मामलों में उनके साथ नेक सम्बन्ध क़ायम रखो।

(उसदुल ग़ाबग फ़ी मअरफ़तिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 455 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2003 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत सअद रज़ि को अपना मामूं कहा करते थे।

(अस्हाबे बदर लेखक क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान सुलैमान मन्सूरपूरी पृष्ठ 91 मकतबा इस्लामिया लाहौर 2015 ई)

एक बार हज़रत सअद रज़ि सामने से आ रहे थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखकर फ़रमाया यह मेरे मामू हैं। किसी का ऐसा मामू हो तो दिखाए। इमाम तिर्मिज़ी ने इसका कारण यह वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता का सम्बन्ध बनू ज़ुहरा से था और हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का सम्बन्ध भी बनू ज़ुहरा से था।

(जामे तिर्मिज़ी किताबुल मनाकिब बाब मनाक़िब अबू इसहाक़ सअद बिन अबी वकास हदीस नम्बर 3752)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिरा पहाड़ पर थे कि वह हिलने लगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे हिरा !ठहर जा क्योंकि तुझ पर नबी या सिद्दीक़ या शहीद के इलावा कोई नहीं है। उस पहाड़ पर उस वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि थे। यह मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब फ़ज़ाइल तलह व ज़ुबैर हदीस 2417)

इस्लाम के आरम्भिक दिनों में जब मुसलमान छुप कर नमाज़ें अदा किया करते थे तो एक बार हज़रत सअद रज़ि मक्का की एक घाटी में कुछ सहाबा के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि वहां मुशरिकीन आ पहुंचे और उन्होंने मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाना शुरू किया और उनके धर्म अर्थात इस्लाम में दोष निकालना चाहा यहां तक कि लड़ाई तक नौबत पहुंच गई। हज़रत सअद रज़ि ने एक मुशरिक के सिर पर ऊंट की हड्डी इतनी ज़ोर से मारी कि उसका सिर फट गया। अत: यह पहला ख़ून था जो इस्लाम में बहाया गया था।

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 324 दारुल फिक्र बेरूत लबनान, 2001 ई)

मक्का में जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों के साथ बाईकॉट किया और उनको शुअबे अबी तालिब में कैद कर दिया गया तो वे मुसलमान जो इन कष्टों का शिकार हुए उनमें से एक हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि भी थे। इसका वर्णन करते हुए 'सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने इस तरह लिखा है कि

"जो जो कष्ट और सख़्तियां इन दिनों में इन कैदियों को उठानी पड़ीं उनका हाल पढ़ कर शरीर पर कपकपी आ जाती है। सहाबा का वर्णन है कि कई बार उन्होंने जानवरों की तरह जंगली दरख़्तों के पत्ते खा-खा कर गुज़ारा किया। सअद बिन अबी वक़ास रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार रात के समय उनका पांव किसी ऐसी चीज़ पर जा पड़ा जो गीली और नर्म मालूम होती थी " शायद खजूर का कोई टुकड़ा होगा "उस समय उनकी भूक की यह अवस्था थी कि उन्होंने फ़ौरन उसे उठा कर निगल लिया और वह वर्णन करते हैं कि मुझे आज तक पता नहीं कि वह क्या चीज़ थी। एक दूसरे अवसर पर भूख के कारण से उनकी यह अवस्था थी कि उन्हें एक सूखा हुआ चमड़ा ज़मीन पर पड़ा हुआ मिल गया तो उसी को उन्होंने पानी में नर्म और साफ़ किया और फिर भून कर खाया और तीन दिन इसी ग़ैबी खाने पर व्यतीत किए।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 166-167)

जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हिज्रत का आदेश दिया तो हज़रत सअद रज़ि ने भी मदीना की तरफ़ हिज्रत फ़रमाई और वहां अपने मुशरिक भाई उत्बा बिन अबी विकास के यहाँ निवास किया। उत्बा से मक्का में एक ख़ून हो गया था जिसके कारण से वह मदीना में आकर आबाद हो गया था।

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 66-67)

हज़रत सअद रज़ि अव्वलीन हिजरत करने वालों में से थे। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना आने से पहले हिजरत करके मदीना आ गए थे।(उम्दतुल कारी शरह सही बुख़ारी भाग 1 पृष्ठ 305 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत, 2001 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का भाईचारा हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के साथ फ़रमाया जबकि एक दूसरी रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का भाईचारा हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि से फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 103 सअद बिन अबी विकास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

भाई बनाने में इस मतभेद का मौलाना ग़ुलाम बारी साहिब सैफ ने यह हल पेश किया है कि मक्का में आपका भाई बनाना हज़रत मूसा के साथ था और मदीना में हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के साथ था।

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 64)

हज़रत सअद रज़ि क़ुरैश के बहादुर घुड़सवारों में से थे। जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुरक्षा और दिफ़ा की ज़िम्मेदारी जिन सहाबा के सपुर्द होती थी उनमें से एक हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि भी थे।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 172 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2010 ई)

अबू इसहाक़ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से चार आदमी बहुत सख़्त हमला करने वाले थे। हज़रत उमर रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत सअद रज़ि।

(अल-असाब फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 325 दारुल फिक्र बेरूत लबनान,2001 ई)

हिज्रत मदीना के बाद मुसलमानों को कुफ़्फ़ार की तरफ़ से हमले का ख़ौफ़ और परेशानी रहती थी जिसके कारण से शुरू में मुसलमान अक्सर रातों को जागा करते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी प्राय रातों को जागते रहते थे। इस बारे में एक रिवायत मिलती है हज़रत आयशा रज़ि वर्णन फ़रमाती हैं कि मदीना तशरीफ़ लाने के ज़माना में एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सो न सके तो आप रज़ि ने फ़रमाया काश मेरे सहाबा में से कोई नेक आदमी आज रात मेरा पहरा दे। वह कहती हैं हम इसी अवस्था में थे कि हमने हथियार की आवाज़ सुनी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कौन है? तो बाहर से यह आवाज़ आई। आने वाले ने यह निवेदन किया कि सअद बिन अबी वकास, कि मैं सअद बिन अबी वकास हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

वसल्लम ने उसे फ़रमाया कि तुम यहां कैसे आए? उन्होंने कहा कि मेरे दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ख़ौफ़ पैदा हुआ इसलिए मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहरे के लिए हाज़िर हुआ हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सअद को दुआ दी और सो गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 282-283)

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब फ़ज़ल सअद बिन अबी वकास हदीस 2410)

यह भी एक हवाला है कि बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में इस घटना का वर्णन तो है लेकिन इसके साथ दुआ का विस्तार नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या दुआ दी थी लेकिन हज़रत सअद रज़ि के मनाक़िब में जो इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किए हैं उनमें उनके बेटे क़ैस से रिवायत है कि मेरे पिता सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए यह दुआ दी थी कि اَللّٰھُمَّ اسْتَجِبْ لِسَعْدٍ اِذَا دَعَا۔ कि हे मेरे अल्लाह सअद रज़ि जब तुझसे दुआ करें तो उनकी दुआ को स्वीकार कीजिओ और इक्माल फी अस्मा-उर्रिजाल में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह दुआ दी थी कि

اَللّٰھُمَّ سَدِّدْ سَھْمَہٗ وَاَجِبْ دَعْوَتَہ

कि हे अल्लाह उनका तीर ठीक निशाने पर बैठे और उनकी दुआ स्वीकार करना।

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 67-68)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इसी दुआ की वजह से हज़रत सअद रज़ि दुआ की स्वीकारियता के कारण से मशहूर थे।

(अलासाब फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2, पृष्ठ 324-325 दारुल फिक्र बेरूत लबनान,2001 ई)

हज़रत सअद बिन अबी इस प्रकार के आदमी थे जिन की दुआएं स्वीकार होती थीं। एक आदमी ने आप पर झूठ घड़ा तो आप ने उसके ख़िलाफ़ दुआ की कि अल्लाह! अगर यह झूठ बोल रहा है तो इसकी निगाह जाती रहे और इसकी उम्र लम्बी हो और उसे फ़ित्ना में मुब्तला कर दे। अत: उस शख़्स को ये सारी बातें हुईं।

(जामेउल उलूम वल-हकम फ़ी शरह ख़मसीन हदीसा मन जवामेअल क़लम भाग 2 पृष्ठ 350 मुसस अरर्साल बेरूत 2001 ई)

एक रिवायत में आता है कि क़ैस बिन अबी हाज़िम वर्णन करते हैं कि एक बार मैं मदीना के बाज़ार में जा रहा था कि मैं अहजारुज़यत स्थान पर पहुंचा तो मैंने देखा कि लोगों की एक भीड़ एक शख़्स के पास मौजूद थी जो सवारी पर बैठा था और हज़रत अली रज़ि को गालियां निकाल रहा था। इतने में हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि वहां आगए और उनमें खड़े हो गए और उनसे पूछा कि क्या हुआ है? लोगों ने जवाब दिया कि यह आदमी हज़रत अली रज़ि को गालियां दे रहा है। हज़रत सअद रज़ि आगे बढ़े तो लोगों ने उन्हें रास्ता दिया यहां तक कि आप उसके सामने जा खड़े हुए और पूछा हे शख़्स तू क्यों हज़रत अली रज़ को गालियां दे रहा है? क्या वह सबसे पहले इस्लाम नहीं लाए थे? क्या वह पहले शख़्स नहीं थे जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी ? क्या वह लोगों में सबसे अधिक मुत्तक़ी इन्सान नहीं हैं? क्या वह लोगों में सबसे अधिक इल्म वाले इन्सान नहीं हैं? हज़रत सअद रज़ि वर्णन करते गए यहां तक कि उन्होंने फ़रमाया कि इसी तरह क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे अपनी बेटी ब्याह कर उनको अपनी दामादी का सौभाग्य नहीं प्रदान किया था ? क्या वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग में झंडा उठाने वाले नहीं थे? रावी कहते हैं कि इसके बाद हज़रत सअद रज़ि ने क़िब्ला की तरफ़ मुंह किया और दुआ के लिए हाथ उठाया और दुआ की कि हे अल्लाह अगर उसने तेरे औलिया में से एक वली अर्थात हज़रत अली रज़ि को गालियां दी हैं तो तू इस भीड़ के अलग होने से पहले अपनी क़ुदरत का निशान दिखा। यह मुस्तदरिक का हवाला है। रावी क़ैस कहते हैं कि अल्लाह की क़सम अभी हम वहां से अलग नहीं हुए थे कि उस शख़्स की सवारी ने उसे नीचे गिरा दिया और उसके सिर को अपने पैरों से पत्थर पर मारा जिससे उसका सिर फट गया और वह मर गया।

(अल-मुस्तदरिक किताब मअरफतिस्सहाबा बाब सअद बिन अबी वकास रिवायत 6121 भाग 3, पृष्ठ 571-572 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत सअद रज़ि ने जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत मदीना के फ़ौरन बाद रात को हिफ़ाज़त की थी, इसी तरह का उनकी एक और घटना जंग ख़ंदक़ के अवसर पर भी इतिहार में नज़र आती है। इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि

हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि आप रज़ि पहरा देते हुए थक जाते अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। जिस तरह बाक़ी सहाबा पहरा दे रहे होते थे आप रज़ि भी सहाबा के साथ पहरा देते और सर्दी से निढाल हो जाते। तब वापस आकर थोड़ी देर मेरे साथ लिहाफ़ में लेट जाते परन्तु जिस्म के गर्म होते ही फिर उस शिगाफ़ की सुरक्षा के लिए चले जाते। इसी तरह निरन्तर जागने से आप रज़ि एक दिन बिल्कुल निढाल हो गए और रात के समय फ़रमाया काश इस समय कोई मुख़लिस मुसलमान होता तो मैं आराम से सो जाता। इतने में बाहर से सअद बिन अबी वक़ास रज़ि की आवाज़ आई। आप रज़ि ने पूछा क्यों आए हो। उन्होंने कहा आप रज़ि का पहरा देने आया हूँ। आप रज़ि ने फ़रमाया मुझे पहरे की ज़रूरत नहीं। तुम अमुक़ जगह जहां ख़ंदक़ का किनारा टूट गया है जाओ और उसका पहरा दो ताकि मुसलमान महफ़ूज़ रहें। अत: सअद उस जगह का पहरा देने चले गए और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ देर के लिए सो गए।

(उद्धरित दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 279)

हज़रत सअद बिन अबी वकास का बाक़ी वर्णन इंशा अल्लाह बाद में होगा।

आज भी में दो तीन ग़ायब जनाज़े पढ़ाऊंगा जिनका अब इस वक़्त वर्णन करूँगा। पहला वर्णन आदरणीय मास्टर अब्दुल समीअ ख़ान साहिब काठगढ़ी का है जो 6 जुलाई को रब्वाह में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। 1937 ई में क़ादियान में पैदा हुए। उनके पिता अब्दुर्रहीम साहिब काठगढ़ी सिलसिला के पुराने ख़िदमत करने वालों में से थे। आपके दादा हज़रत चौधरी अब्दुस्सलाम ख़ान साहिब काठगढ़ी ने 1903 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य पाया। आप सहाबी थे। आरम्भिक शिक्षा प्राइमरी तो मास्टर समीअ साहिब की क़ादियान में ही हुई। फिर पार्टीशन हो गई तो मैट्रिक रब्वाह आकर की। आपकी औलाद में एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं। उनकी पत्नी तीन चार साल पहले वफ़ात पा गईं थीं। 1960 ई में बी एस सी करने के बाद इसी वर्ष अस्थायी उस्ताद के तौर पर तालीमुल इस्लाम स्कूल में पढ़ाना शुरू किया। फिर 1962 ई में बी ऐड किया और नियिमत उस्ताद निर्धारित हुए। 1969 ई में पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर से ऐम ऐड किया तो सीनीयर उस्ताद बन गए। फिर 1972 ई में आप तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल रब्वाह के हेडमास्टर निर्धारित हुए। फिर स्कूल नेशनलाईज़ हो गया। फिर 1970 ई में आपका तबादला क्योंकि वह नेशनलाइज़ड स्कूल था तो गर्वनमैंट ने बाहर अपने किसी दूसरे स्कूल में कर दिया और फिर विभिन्न स्कूलों में यह पढ़ाते रहे 2005 ई से 2009 ई तक ज़ईम अन्सारुल्लाह और 2013 ई से 16 ई तक बतौर सदर हलक़ा दारुल रहमत शर्क़ी रब्वाह में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मेरे भी यह स्कूल में उस्ताद थे। बड़े अच्छे अंदाज़ में पढ़ाया करते थे। चेहरे पर हमेशा नर्मी रहती थी और समझाते भी बड़े अच्छे अंदाज़ में थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद को भी हमेशा जमाअत और ख़िलाफ़त से जोड़े रखे।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय सय्यद मुजीबुल्लाह सादिक़ साहिब का है जो 28 मई को 83 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप आदरणीय सय्यद सादिक़ अली साहिब और सय्यदा सलमा बेगम साहिबा बिन्त सय्यद महबूब आलम बिहारी साहिब के बेटे थे। क़ादियान की पवित्र बस्ती में आपने आँख खोली। क़ादियान के पाकीज़ा माहौल में प्रवान चढ़े। आपके पिता सय्यद सादिक़ अली साहिब आफ़ सहारनपुर ने हज़रत ख़लीफ़ात अव्वल रज़ि के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य हासिल किया था। आपके नाना हज़रत सय्यद महबूब आलम साहिब बिहारी ने विभाजन के समय 19 सितम्बर1947 ई को कादियान में किसी मुख़ालिफ़ की गोली का निशाना बन कर जामे शहादत पीने का सौभाग्य हासिल किया और इसी तरह आपके नाना के भाई सय्यद महमूद आलम साहिब जो सदर अंजुमन अहमदिया के आडीटर थे और उनको भी यह सम्मान प्राप्त था कि बिहार से पैदल चल के कादियान पहुंचे और उन्होंने बैअत

की थी। आपको यहां यूके में अर्लज़फ़ील्ड (Earlsfield)में बतौर सदर जमात ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। फिर रिटायरमैंट के बाद आदरणीय अमीर साहिब बर्तानिया के दफ़्तर में रज़ाकार कारकुन के तौर पर सौला वर्ष तक सेवा करते रहे। बड़ी जाँ-फ़िशानी के साथ अपनी डयूटी अदा करते थे और हमेशा उनके चेहरे पर नर्मी और मज़ाक की नरमी रहती थी। मज़ाक़ वाली तबीयत थी और काम पूरे ध्यान से करते और कभी कहीं इस तरह के बोझ नहीं लेते थे और दूसरों को परेशान नहीं करते थे। कोशिश यह होती थी कि अधिक से अधिक काम दूसरों का भी ख़ुद कर लें। उनकी शादी रब्वाह में आदरणीया आयशा सादिक़ साहिबा बिन्त बाबू मुहम्मद आलम साहिब रिटायर्ड स्टेशन मास्टर से हुई। और 1968 ई में उनकी पत्नी को भी रब्वाह में लजना के विभिन्न विभागों में काम करने की तौफ़ीक़ मिली। उनके दो बेटे और दो बेटियां हैं। डाक्टर कलीमुल्लाह-सादिक़ साहिब तो एम टी ए में काफ़ी रज़ाकाराना ख़िदमत करते रहते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़े तहज्जुद अदा करने वाले थे। उमरा करने के लिए गए। घुटनों में उनके बहुत कष्ट था। उनकी पत्नी कहती हैं कि बावजूद उनको व्हील चेयर उपलब्ध कराने के उन्होंने यह कहा कि मैं तो उमरा का सवाब लेना चाहता हूँ इसलिए पैदल ही चलूँगा। इसी तरह अपने चंदों की भी बड़ी फ़िक्र रहती थी और उनके बच्चों ने और दूसरे काफ़ी लोगों ने जो मुझे ख़त लिखे हैं उनमें उनकी खूबियां वर्णन की हैं। बच्चे तो ख़ूबियों का वर्णन करते ही हैं और उनके बच्चे जिस तरह माशा अल्लाह जमाअत के साथ जुड़े हुए हैं इससे ज़ाहिर है कि उन्होंने ख़िलाफ़त और जमाअत के साथ मुहब्बत बच्चों के दिलों में पैदा की है और उच्च रंग में तर्बीयत की है लेकिन जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि इन्सान के पड़ोसी और मिलने-जुलने वाले जो हैं वे उसकी नेकियों के उसके किरदार के असल गवाह होते हैं। उसकी नेकियों की तसदीक़ करने वाले होते हैं और यह बात मुजीबुल्लाह सादिक़ साहिब पर हक़ीक़त में सच्च होती है। उनके ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी उनकी वफ़ात पर बहुत दुखी थे। उनकी भी आप ख़िदमत करते रहे और अपने बच्चों से भी उनकी ख़िदमत करवाते रहे। इसी तरह उनके दफ़्तर में साथ काम करने वाले हर शख़्स ने उनकी ख़ुशमिज़ाजी और काम में लगन और संजीदगी और इसके साथ हर कारकुन की सेवा करने की ख़ुसूसीयत का वर्णन किया है। काम भी करते थे और लोगों की सेवा भी करते थे। किसी को चाय भी पिलानी हो तो ख़ुद पिलाते थे। मैं पिछले साल जब इस्लामाबाद गया हूँ तो उनको जो फ़िक्र थी जिसका उन्होंने मुलाक़ात में मुझसे इज़हार किया वह यह थी कि अब हम हर हफ़्ते आपके पीछे जुमा किस तरह पढ़ेंगे ?तो बहरहाल इस पर मैंने उनकी तसल्ली करवाई कि इंशा अल्लाह अक्सर जुमे बैयतुल फुतूह में ही होंगे और जब इस्लामाबाद में हों तो वहां आ सकते हैं। यह बात सुनके फिर उनके चेहरे पर रौनक आई। इसीलिए उन्होंने अपने बच्चों को मस्जिद के क़रीब रखने के लिए ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे की हिज्रत के बाद मस्जिद फ़ज़ल के क़रीब घर ले लिया और (ख़ुद) रोज़ाना एक घंटा दूर काम पर जाते थे ताकि बच्चे मस्जिद के साथ अटैच्ड (attached)रहें और यही फ़िक्र उनको अब भी थी कि दूर जाने के कारण से जुमा किस तरह पढ़ा जाएगा। बहरहाल इंतिहाई मुख़लिस और नेक इन्सान थे। बड़ी वफ़ा के साथ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी और यह वफ़ा अपने बच्चों में भी पैदा करने की कोशिश की। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनके बच्चों को भी हमेशा ख़िलाफ़त और जमाअत से उनकी इच्छा के अनुसार बल्कि इससे बढ़कर जुड़े रहने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। उनकी पत्नी को भी अपनी हिफ़ाज़त में रखे और सुकून और तसकीन के सामान पैदा फ़रमाए।

तीसरा जो जनाज़ा है वे हमारे पुराने कारकुन और अल्लाह की राह में कैद सहन करने वाले राना नईमुद्दीन साहिब मरहूम का है इसका वर्णन तो मैं पहले भी कर चुका हूँ। पिछले जुमा रह गया था। उनका भी जनाज़ा इन जनाज़ों में शामिल होगा जो इन शा अल्लाह जुमा के बाद अदा करूँगा। अल्लाह तआला इन सब के साथ मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कोर्स करते हैं ? ताकि न क़ाज़ियों का समय नष्ट हो और न मुराफ़ा आलिया का।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के कज़ाई फ़ैसला जात छप गए हैं। सब को दें। इसी तरह बाक़ी भी छप जाऐंगे वे भी दें। आपकी लाइब्रेरी में होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: असल यह है कि मुझे जल्द जल्द फ़ैसले चाहिऐं। हर तीन महीने मुझे इस तरह रिपोर्ट भिजवाया करें कि इस समय में जो ख़ुलाअ , तलाक़ के केस हुए उनके कारण क्या हैं और किस तरह उन कारणों को दूर किया जा सकता है। रिपोर्ट बना कर अमीर साहिब को भी दिया करें। मुझे भी रिपोर्ट भिजवाएं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: क़ाज़ियों में इतना हौसला होना चाहिए कि एक घंटा तक गालियां सुन सकते हों। अगर केस सुनते हुए क़ाज़ी को गुस्सा आ जाए तो कह दे कि अब केस ख़त्म और नई तारीख़ दे दे, हफ़्ता बाद आएं या सदर क़ज़ा को कहे कि इस केस के लिए किसी और को क़ाज़ी निर्धारित कर दें।

सदर क़ज़ा ने निवेदन किया कि कई लोग कह देते हैं कि क़ाज़ी पक्षपाती है किसी और को बना दें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लोग, दोनों पक्ष ख़ुद अंदाज़ा लगा लेते हैं लेकिन क़ाज़ी की कोई ऐसी नीयत नहीं होती। क़ाज़ी जो सवाल करता है दोनों पक्ष इन सवालों से ख़ुद ही नतीजा निकाल लेते हैं।

सदर साहिब क़ज़ा ने निवेदन किया कि हम एक फ्लावर बना रहे हैं और वह हर पक्ष को दिया जाएगा ताकि दोनों पक्षों को क़ज़ा में आने से पहले पता हो कि उनके फ़राइज़ , अधिकार क्या हैं और क़ज़ा के तरीक़े के बारे में भी लिखा हो। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ठीक है। फ्लावर बनाएँ और इसमें यह भी स्पष्ट कर दें कि औरत क़ज़ा में आते हुए अपने साथ किसी औरत को ला सकती है किसी वकील को अपने साथ ला सकती है। जो भी केस आता है इसको लिखकर उसके साथ ही फ्लावर दे दिया कि जा कर पढ़ो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि शादी होते ही तीन चार दिन के बाद जो केस आ जाते हैं कि तलाक़ लेनी है या ख़ुला लेनी है तो ऐसे केस अमीर साहिब के सपुर्द कर दिया करें। इसको अभी डील न किया करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :क़ज़ा का काम सुविधा पैदा करना है। हुक्म को मनवाना या ठूंसना नहीं है। दुआ करके फ़ैसला करना चाहिए। फ़ैसला से पहले हर क़ाज़ी को 2 नफ़ल पढ़ने चाहिऐं। सुलह तथा सफाई की कोशिश होनी चाहिए। किसी का हक़ मारना या किसी को सज़ा दिलवाना ऐसा नहीं होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बहुत से मामलों के हवाला से कई प्रबन्धात्मक हिदायतें भी दीं और हिदायत फ़रमाई कि सब हिदायतों को ट्रांसकराइब करके पहले प्राईवेट सैक्रेटरी को भिजवाएं फिर बाद में सब क़ाज़ियों को दें और उन पर कार्रवाई हो।

क़ज़ा के मैंबरों की हुज़ूर अनवर के साथ यह मीटिंग 12 बजे तक जारी रही। आख़िर पर समस्त मैंबरों ने एक ग्रुप की सूरत में हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

फ़ैमिली मुलाक़ातें (पहला सैशन)

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इसमें 29 फ़ैमिलीज़ के 95 लोगों ने और 14 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात कारने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 28 जमाअतों से आई थीं। कई इलाक़ों से आने वाली फ़ैमिलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तय करके आई ओसना ब्रोक (Osnabrck) से आने वाले 315 किलोमीटर और Dresden से आने वाली फ़ैमिलीज़ 450 किलोमीटर का दूरी तय करके पहुंची थीं।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान से आने वाली एक फ़ैमिली और ताजिकस्तान लाटोया (Latvia) दुबई और बंग्लादेश से आने वाले लोगों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों का प्रोग्राम 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

लजना की आमीन का आयोजन

2 बजकर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के लजना हाल में तशरीफ़ लाए। जहां बच्चियों का आमीन आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 35 बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिया तमसीला अहमद, अदन हक़ राना,शाफिया अहमद, हिरा अहमद, बासमा ख़ालिद , नाइला रहमान, आइरा हासलीन शाद, हफ़सा इमरान, दुआ चौधरी, महक शाइस्ता अहमद, अबरेश बाजवा, ईमान ताहिर, सना मुनव्वर, मिनहाल अहमद, फ़ातिहा एहसान, यमना अहमद, यासमीन मुहम्मद, माहदा सेहर आरिफ़, मर्यम ऐवान, मह नूर फ़ातिमा, अबीरा अहमद, अलीना इदरीस, फ़रीदा असद, अंगबीन नवाज़, हफ़सा मक़सूद, नूरा अहमद, एलीज़ा झटवल, इर्वा झटवल, मुनीफ़ा ख़ालिद, पलूशा अहमद, सबाहा इमरान, ख़ान हिबतुल वारिस, सालेहा इनाम, अलीशा खोखर, लुबैना इलयास।

आमीन के इस आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें (दूसरा सैशन)

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के111 लोगों और 18 आदमियों ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आक़ा के साथ हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाक़ात कारने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की निम्नलिखित जमाअतों से थीं।

Trier, Ludenscheid, Mannheim,Weiterstadt, Iselohn, Rudesheim, Wurzburg, Ginsheim, Balingen, Eppertshausen, Goddelau, Frankfurt, Dietzenbach, Bensheim-West, Euskirchen, Al Tenstadt, Ratingen स्टट गार्ड, ग्रोस, बादिन

इन जमाअतों के अतिरिक्त पाकिस्तान ,स्विटज़रलैंड ,कैनेडा और क़ादियान (इंडिया)से आने वाले कई लोगों ने भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाले इन सभी लोगों और फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाएं। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम शाम 8 बजकर 10 मिनट तक जारी रहा।

आमीन का आयोजन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 35 बच्चों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

आशिर महमूद, आज़श अली रज़ा, मुहम्मद अब्दुल्लाह, रयान भट्टी, हारिस महमूद, फ़ारस अहमद अतीक़, नूरुल हक़ शमस, वक़ास अहमद, चौधरी फ़ातिह अहमद, नूर इस्लाम, मुहम्मद मन्नान गुल, अहमद फ़ूज़ान ताहिर, काशिफ़ महमूद, काहलों काशिफ़ इमरान, वलीद अहमद नायक,रोशन मन्सूर,अदनान उसमान अहमद, मुहम्मद तलहा, मसरूर अहमद, अयान अफ्फान अहमद, तमसील अहमद, दानियाल अहमद, नुब्रास अली यूसुफ़, वलीद अहमद बारी, शेख़ अर्सलान, लब्बैक अहमद नायक, फ़ूज़ान मिर्ज़ा, नसीब अहमद,रोशान अहमद, अर्सलान मलिक, मुहम्मद जाज़िब, दानिश इकराम, मुहम्मद इब्राहीम, सदीद साजिद, हाशिर अहमद महमूद।

आमीन के इस आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

17 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टस देखीं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही। प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

फ़ैमली मुलाक़ातें

35 फ़ैमिलीज़ के136 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाले जर्मनी की 28 विभिन्न जमाअतों से आए थे। कई फ़ैमिलीज़ और लोग बड़ा लम्बा सफ़र तय करके आए थे। Trier से आने वाले 2 सौ किलो मीटर Waiblingen से आने वाले 215 किलो मीटर, कासल से 220 किलोमीटर और Dren से आने वाले 250 किलो मीटर की दूरी तय करके आए थे। इसी तरह Aalen से आने वाले 260 और Ebingen और Bocholt से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोग 3 सौ किलो मीटर की दूरी तय करके आए थे। आज मुलाक़ात करने वालों में पाकिस्तान से आने वाली एक फ़ैमिली भी थी।

आज मुलाक़ात करने वालों में से प्रत्येक ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए।

मुलाक़ात करने वाले सभी लोग और फ़ैमिलीज़ ने जहां अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया वहां प्रत्येक बरकतों वाले क्षणों से बे-इंतिहा बरकतें समेटते हुए बाहर आया। बीमारों ने अपनी सेहतयाबी के लिए दुआएं प्राप्त कीं। विभिन्न परेशानियों, तकलीफों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी तकलीफ़ें दूर होने के लिए दुआ के निवेदन किए और दिल का सन्तोष पाकर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। छात्रों और छात्राओं ने अपनी शिक्षा और परीक्षाओं में सफलता के लिए अपने आक़ा से दुआएं प्राप्त कीं। अत: प्रत्येक ने अपने महबूब आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया। राहत तथा सुकून और दिल का सन्तोष प्राप्त हुआ। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर से बाहर तशरीफ़ लाए तो सीढ़ियों के पास एक नौजवान को स्ट्रेचर पर लाया गया था। महोदय अताउल वासे ,उम्र 32 साल आदरणीय अब्दुल शकूर साहिब कनुरी सिंध का बेटा है। 17 साल पहले एक दुर्घटना में सिर के बल गिरा था और सख़्त चोट आई थी। क़ौमा की अवस्था है न बोल सकता है और न हरकत कर सकता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए उसकी वालिदा और भाई से जो पास खड़े थे उस की बीमारी के हवाले से गुफ़्तगु फ़रमाई, इयादत फ़रमाई। अलैसल्लाह वाली अँगूठी उसके चेहरा पर लगाई और दुआएं दीं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ ले आए। मस्जिद और इसके साथ वाला हाल भी नमाज़ियों से भरा होता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इंतिज़ामिया को हिदायत फ़रमाई कि साथ वाले हाल में जो पहली सफ़ है वहां जो कुर्सियाँ रखी गई हैं वे ऐसे स्थान पर और ऐसी पोज़ीशन में हैं कि इमाम से आगे हैं। उनको एक सफ़ पीछे किया जाए। अत: उसी समय एक सफ़ पीछे की गई और यह पहली सफ़ ख़त्म कर दी गई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

दरूद शरीफ का महत्व एवं बरकतें

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

(सूरह अहज़ाब 57)

अनुवाद: अवश्य अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا مِنْ اَحَدٍ یُسَلِّمُ عَلَیَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰہُ عَلَیَّ رُوْحِیْ اَرُدُّ عَلَیْہِ السَّلَامَ

(अबू दाऊद किताबुल मनासिक)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो आदमी भी मुझ पर सलाम भेजेगा उस का जवाब देने के लिए अल्लाह तआला मेरी रूह को वापस लौटा देगा ताकि मैं उस के सलाम का जवाब दे सकूं। (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सलाम भेजने वाले को इस दुरूद का ऐसा सवाब और बदला मिलेगा जैसे ख़ुद हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलाम तथा दरूद का जवाब प्रदान फ़रमा रहे हों।)

हज़रत उम्र बिन ख़िताब रज़ि फ़रमाते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ आसमान और ज़मीन के मध्य ठहर जाती है और जब तक तू अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद न भेजे इस में से कोई हिस्सा भी (ख़ुदा तआला के हुज़ूर पेश होने के लिए आसमान पर नहीं जाता।)

(तिर्मिज़ी अबवाबुल वितर हदीस नम्बर 486)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"दुरूद जो दृढ़ता की प्राप्ति का एक बेहतरीन माध्य है बहुत अधिक पढ़ो परन्तु न रस्म तथा आदत के रूप में बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्न तथा उपकारों को समक्ष रखकर और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदारिज और रुत्बा की तरक़्क़ी के लिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सफलताओं के लिए। इस का नतीजा यह होगा कि दुआ की कुबूलियत का मीठी और आन्नद वाला फल तुमको मिलेगा।"

(मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 38)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

"हमारा भी काम, जिन्होंने अपने आप को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस सच्चे आशिक़ और ज़माना के इमाम के सिलसिला और उस की जमाअत से सम्बन्धित किया हुआ है, यह है कि अपनी दुआओं को दुरूद में ढाल दें और फ़िज़ा में इतना दुरूद, सच्चे सिदक़ के साथ बिखेरें कि फ़िज़ा का हर कण दुरूद से महक उठे। और हमारी समस्त दुआएं इस दुरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंच कर क़बूलीयत का दर्जा पाने वाली हों। यह है इस प्यार और मुहब्बत का इज़हार जो हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से होना चाहिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आल से होना चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 फरवरी 2006 ई ख़ुत्बाते मसरूर भाग 4 पृष्ठ 115)

☆ ☆ ☆ ☆

माता पिता की सेवा का महत्व

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ رَغِمَ اَنْفُ ثُمَّ رَغِمَ اَنْفُ ثُمَّ رَغِمَ اَنْفُ، قِیْلَ مَنْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! قَالَ مَنْ اَدْرَکَ اَبَوَیْہِ عِنْدَ الْکِبَرِ اَحَدَھُمَا اَوْ کِلَیْھِمَا فَلَمْ یَدْخُلِ الْجَنَّۃَ۔

(मुस्लिम किताबुल तहारत)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मिट्टी में मिले उस की नाक(यह शब्द आप ने तीन बार दुहराए) अर्थात ऐसा व्यक्ति हतभागा और बदकिस्मत है लोगों ने निवेदन किया कि हुज़ूर कौन सा? वह आदमी जिस ने अपने बूढ़े माता पिता को पाया और फिर उन की सेवा कर के जन्नत में दाख़िल न हो सका।

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِکٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یُّمَدَّ لَہٗ فِیْ عُمُرِہٖ وَیُزَادَ فِیْ رِزْقِہٖ فَلْیَبِرَّ وَالِدَیْہِ وَلْیَصِلْ رَحِمَہٗ۔ (मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 3 पृष्ठ 266)

अनुवाद हज़रत अनस रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस व्यक्ति की इच्छा हो कि उस कि आयु लम्बी हो उस को चाहिए कि अपने माता पिता से उत्तम व्यवहार करे।(और अपने करीबी रिश्तेदारों के साथ बना कर रखे) और सिला रहमी की आदत डाले।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِیَّاہُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا۔ (बनी इस्राईल: 24) कि अर्थात तेरे रब्ब ने चाहा है कि तू केवल उसी की बन्दगी करे। और माता पिता से उपकार करे। इस आयत में बुत की पूजा करने वालों को जा बुत की पूजा करते हैं। समझाया गया है कि बुत कोई चीज़ नहीं और बुतों का तुम पर कोई उपकार नहीं। उन्होंने तुम्हें पैदा नहीं किया और तुम्हारे खाने पिलाने में वे तुम्हारा बोझ नहीं उठाते थे। और ख़ुदा जायज़ रखता कि इस के साथ किसी और की उपासना की जाए तो यह आदेश देता कि तुम माता पिता की उपासना करो क्योंकि वे भी मजाज़ी रब्ब हैं। और प्रत्येक व्यक्ति कुदरती रूप से यहां तक कि दरिन्दें और जानवर भी अपनी औलाद को अकाल में नष्ट होने से बचाते हैं। अत: ख़ुदा की रबूबियत के बाद इन की भी एक रबूबियत है और रबूबयित का जोश भी इन की तरफ से है।"

(हक़ीकतुल वह्य रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 214)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला ने माता पिता के साथ उत्तम व्यवहार की बहुत ताकीद फरमाई है। सिवाए उसके कि अल्लाह तआला की इबादत करने से रोकें। उसके अतिरिक्त हर बात में उन की इताअत का आदेश है। और यह आदेश इस लिए है कि जो सेवा बचपन में उन्होंने हमारी की है उस का बदला तो हम नहीं उतार सकते। इस लिए यह आदेश है कि उन की सेवा के साथ उन के लिए दुआ भी करो कि अल्लाह तआला उन के लिए रहम फ़रमाए और बुढ़ापे की उम्र में भी उन को हमारी तरफ से कोई दुख न पहुंचे। यह भी याद रखें कि यह सेवा और दुआ के बावजूद यह न समझ लें कि हम नेकी बहुत सेवा कर ली और उन का हक अदा हो गया? सब से बड़ा फज़ल जो उस अर्थात ख़ुदा तआला ने हम पर किया है वह यह है कि तुम्हें माता पिता दिए। जिन्होंने तुम्हारा लालन तथा पालन किया और बहुत अधिक सेवा की रातों को जाग जाग कर तुम्हें अपने सीने से लगाया... अत: कौन सी सेवा और कुरबानी है जो तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे लिए नहीं की।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 16 जनवरी 2004 ई ख़ुत्बाते मसरूर भाग 2, पृष्ठ 46 से 47)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 27 August 2020 Issue No.35

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सदर अन्जुमन अहमदिया क़ादियान के विभाग तज़य्युन में सेवा करने के इच्छुक ध्यान दें।

तज़य्युन विभाग क़ादियान में नई मन्ज़ूर की गई अम्रीकन बेस्ड ग्रास कट्टर मशीन के लिए ड्राईवर की असामी भरी जानी है जो दोस्त बतौर ड्राईवर इस असामी पर सेवा करने के इच्छुक हों वे अपनी दरख़ास्तें दो महीने के अन्दर नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें निम्नलिखित हैं

(1)उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाईसैंस और ड्राइविंग का अनुभव होना ज़रूरी है।

(2)उम्मीदवार थोड़ा बहुत टेक्नीकल काम भी जानता हो ताकि आवश्यकता अनुसार इस कट्टर मशीन को ठीक भी कर सके।(3) उम्मीदवार ट्रैक्टर ट्राली चलाना जानता हो। (4)उम्मीदवार आज्ञाकारी हो और ज़रूरत के समय दूसरे काम के लिए भी तैयार हो। (5)उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

6)उम्मीदवार को बर्थ सर्टीफ़िकेट पेश करना ज़रूरी होगा।

(7)वही उम्मीदवार ड्राइवर की सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इंटरव्यू बोर्ड तक़र्रुर कारकुनान में सफल होंगे।(8)वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाऐंगे जो नूर हस्पताल क़ादियान से मैडीकल फ़िटनैस सर्टीफ़िकेट के अनुसार सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे।(9)उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा दोयम के बराबर अलाउनस तथा अन्य सुविधाएं दी जाएँगी। (10) उम्मीदवार को कादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अपने से करना होगा।(11)अगर उम्मीदवार की स्लेक्शन होती है तो क़ादियान में अपने रहने का प्रबन्ध ख़ुद करना होगा।

नोट: उपरोक्त निवेदन फ़ार्म नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म नियम के अनुसार भर कर आने पर उस के अनुसार कार्रवाई होगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

(नाज़िर दीवान क़ादियान)
(Ph) 01872-501130 (Mob) 9877138347, 9646351280
e-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

सिराते मुस्तक़ीम (सीधा मार्ग)

बात यह है कि सलाह की हालत में इन्सान को आवश्यक होता है कि हर एक प्रकार के फ़साद से चाहे वे आस्थाओं के बारे में हो या कर्मों के बारे में , पवित्र हो। जैसे इन्सान का शरीर सलाहीयत की हालत उस वक़्त रखता है जबकि सब इख़ला-त(शरीर की ख़िलते सफरा सोदा खून तथा कफ) बराबरी की अवस्था पर हों और कोई कम ज़्यादा न हो। लेकिन अगर कोई ख़िलत भी बढ़ जाए तो शरीर बीमार हो जाता है। इसी तरह पर रूह की सलाहीयत का भरोसा भी मध्य मार्ग पर है। इसी का नाम क़ुरआन शरीफ़ की परिभाषा में अस्सिरातिल मुस्तक़ीम है। सलाह की अवस्था में इन्सान केवल ख़ुदा का हो जाता है। जैसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि की हालत थी। और धीरे धीरे सालिह इन्सान तरक़्क़ी करता हुआ मुतमइन्ना के स्थान पर पहुंच जाता है और यहां ही इस का सीना खुल जाता है। जैसे रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके फ़रमाया اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ (अलम नश्रह:2) हम सीना खुलने की अवस्था को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 171 से 172 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

जाए सिवाए इसके कि नाक़ाबिल ईलाज मजबूरी हो। अत: जो कोई आदमी बीमारी या शहर से बाहर होने या भूलकर या दूसरे मुसलमान के मौजूद न होने के बहाना के सिवा नमाज़ बाजमाअत को छोड़ता है चाहे वह घर पर नमाज़ पढ़ भी ले तो उस की नमाज़ न होगी और वह नमाज़ को छोड़ने वाला समझा जाएगा

क़ुरआन करीम में नमाज़ पढ़ने का जहां भी हुक्म आया है اَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ के शब्दों से आया है कभी भी ख़ाली الصَّلٰوةَ के शब्द का प्रयोग नहीं हुए यह बात इस बात की स्पष्ट दलील है कि असल आदेश यह है कि फ़र्ज़ नमाज़ को बाजमाअत अदा किया जाए और बिना जमाअत के नमाज़ केवल मजबूरी के अधीन जायज़ है जैसे कोई खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ सके तो उसे बैठ कर पढ़ने की इजाज़त है अत: जिस तरह कोई खड़ा हो कर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखता हो लेकिन बैठ कर पढ़े तो अवश्य वह गुनहगार होगा इसी तरह जिसे बाजमाअत नमाज़ का अवसर मिल सके परन्तु वह बाजमाअत नमाज़ अदा न करे तो वह भी गुनहगार होगा।

आजकल बहुत से लोग ऐसे मिलते हैं जो बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी में कोताही करते हैं और बातों में व्यस्त रहते हैं यहां तक कि नमाज़ हो जाती है और फिर अफ़सोस करते हैं कि नमाज़ चली गई। उनको बहुत सावधानी से काम लेना चाहिए क्योंकि वे मामूली ग़फ़लत से बहुत बड़े सवाब से वंचित रह जाते हैं।

(तफ़सीर कबीर, भाग 1, पृष्ठ 105 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

शादी कार्ड पर सीमा से बढ़कर खर्च करना।

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

"शादी कार्डों पर भी सीमा से बढ़ कर ख़र्च किया जाता है दावतनामा तो.... एक रुपया में भी छप जाता है, यहां भी बिल्कुल मामूली सा पांच सात पेनस (Pence) में छप जाता है, तो दावतनामा ही भेजना है कोई दिखावा तो नहीं करनी लेकिन बिना कारण महंगे महंगे कार्ड छपवाए जाते हैं पूछो तो कहते हैं कि बड़ा सस्ता छपा है सिर्फ पच्चास रुपए में ,अब ये सिर्फ़ पच्चास रुपए जो हैं अगर कार्ड पाँच सौ की संख्या में छपवाए गए हैं तो यह पाकिस्तान में पच्चीस हज़ार रुपए बनते हैं और पच्चीस हज़ार रुपए अगर किसी ग़रीब को शादी के अवसर पर मिलें तो वह ख़ुशी और शुक्राने की भावना में डूब जाता है।"

(ख़ुत्बाते मसरूर , भाग 3 पृष्ठ 334 प्रकाशन क़ादियान 2006)

(नाज़िर इस्लाहो इर्शाद मर्कज़िया क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad